

to this firm for the import of stainless steel in the year 1969. These imports had been allowed under the Barter against the export of Ferro-Silicon. This barter proposal was supported by the Chief Minister of Mysore and was approved by the then Minister of Foreign Trade with the concurrence of the Ministry of Finance on 25th April, 1969, with the proviso that the firm would be allowed to import such raw materials for which priority industries were entitled. This decision to allow import of stainless steel was taken on 7th October, 1969 and I came to the Foreign Trade Ministry in June, 1970. Therefore, I have hardly anything to do with it.

The unkindest cut of all and, perhaps, the most improper thing was when he said that I was trying to influence the press of this country. If we are proud of anything, we are proud of our democracy and free press in the country. To say a word about the press, that the press can be influenced, that they can be bought over, is very very unfair. I must protest strongly against it. The press is rendering really a good service to the country. I have every respect for the press.

Before I conclude, I would say, for some time past, a well-organised, systematic campaign of character assassination against me is going on. The Opposition, specially two or three parties, in the country has been playing a dominant role in that, whether it is in Patna or Delhi or in Calcutta. Everywhere, some kind of a campaign is going on. I must say that whatever programmes are being carried out by me will be carried out without any fear or anything. (Interuptions)

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) :**  
अध्यक्ष जी, अगर आप इजाजत दें तो मैं श्री मिश्र जी से केवल एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

**अध्यक्ष महोदय :** नहीं मैं इजाजत नहीं दूंगा।

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी :** मैं एक छोटा सा प्रश्न पूछना चाहता हूँ—यह बात स्पष्ट नहीं हुई कि ऐसा अधिकारी जिस के खिलाफ रिपोर्ट थी, मिश्र जी अपने साथ रेल मंत्रालय में क्यों लाए—यह सीधा सा सवाल है।

**श्री एल०एस० मिश्र :** उनके खिलाफ कोई रिपोर्ट न करके रोल में थी और न रिकार्ड में थी। एक बात जरूर है हम को भाई चन्द्र शेखर जी ने चिट्ठी लिखी थी और जांच के बाद हम ने चन्द्रशेखर जी को उत्तर दे दिया था। यह बात मुझे कहने का अधिकार नहीं था। इस का उत्तर कामर्स मिनिस्टर को देना चाहिए था। लेकिन चूंकि उस वक्त मैं वहां था, इस लिए उत्तर दे रहा हूँ—उन की चिट्ठी आई थी, उस का उत्तर मैंने दे दिया था—उस के खिलाफ कोई एलीगेशन, या एडवर्स रिमाक्स या एडवर्सब एन्ट्री न करके रोल में थी और न रिकार्ड में थी। उन कानाम हमारे यहां पैनल में आया था। डिपार्टमेंट आफ पर्सनल से, रेलवे बोर्ड के द्वारा उन को चुन लिया गया और हम ने मान लिया। अगर कोई शिकायत होती तो ऐसा नहीं होता।

..... (व्यवधान) .....

*Motion of No.—Confidence in the Council of Ministers—contd.*

**श्री चन्द्रजीत दादब (भ्राजमगढ़) :**  
अध्यक्ष जी, भ्राज जो भविष्यवासी का प्रस्ताव आया है—मैं समझता हूँ विरोधी दलों ने महज एक पोलिटिक्स स्टंट बनाने के लिए इस प्रस्ताव को पेश किया है। सही बात यह है कि भ्राज से कुछ ही दिन पहले जब हमने बड़ी हुई कीमतों पर इस सदन में विचार किया था, उस वक्त हमारे पक्ष के लोगों में, हमारी पार्टी ने, सरकार के लोगों ने इस बात को स्वीकार किया था कि भ्राज हमारे देश में कई कठिन परिस्थितियों की वजह से, चीजों के अभाव के कारण, इतने बड़े अकाल के कारण, मुद्रास्फिति के कारण, चीजों के दाम बढ़े हैं, हमारी जनता की कठिनाइयां बढ़ी हैं। लेकिन भ्राज जिस

[श्री चन्द्र जीत यादव]

परिस्थितियों में यह बहस शुरू हुई, मैंने उन दलों के सभी सदस्यों के भाषणों को बड़े ध्यान से सुना है, सिवाय इसके की वही बातें जो पिछले दो तीन वर्षों से इस सदन में कही जाती रही हैं, उन को ही दोहराया गया है, वही आरोप-प्रत्यारोप जो सदस्यों के ऊपर, मंत्रियों के ऊपर, पहले लगाए गये थे। उन्हीं आरोपों को फिर दोहराया गया। आज बिदोशी दलों ने अविश्वास के माध्यम से चरित्र हनन की एक संवर्धित कोशिश की है। . . . (व्यवधान) . . .

श्रीमन्, दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ—मुझे ऐसा लगता है— इस अविश्वास प्रस्ताव का आधार लेकर मुझे फिर वही स्वरूप दिखाई देता है, जो पिछले आम-चुनाव के समय दिखाई दिया था—जिस को महा गठबन्धन कहते थे, ग्राण्ड-एलाएन्स कहते थे। वही प्रतिक्रियावादी ताकतें, साम्प्रदायिक ताकतें, निहीत-स्त्राय-बाली ताकतें—महागठबन्धन के रूप में सामने आती दिखाई दे रही हैं। जब उन्होंने अपने भाषणों में उत्तर प्रदेश और उत्कल की चर्चा की तो यह बात स्पष्ट हो गई कि वही ग्राण्ड एलाएन्स की बातें इन चुनावों के अन्दर भी आयेंगी और आज इस अविश्वास प्रस्ताव पर एक समय हमारे सामने आई हैं। . . . (व्यवधान) . . .

अध्यक्ष महोदय : आप इधर मेरी तरफ भी देखें—मैं भी बैठा हुआ हूँ।

इस झगड़े से क्या फायदा है। यह ठीक नहीं है—जब आप को रोकता हूँ तो आप शोर मचाते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जब मैं बोल रहा था तो ये मुझ को बोलने नहीं दे रहे थे। आप उस समय यहां नहीं थे।

अध्यक्ष महोदय : वाजपेयी जी आप तो बहुत मजे हैं, आप का तो सब अन्दर करते हैं।

श्री चन्द्रजीत यादव : श्रीमान्, आज मैं यह कह सकता हूँ कि श्री ज्योतिर्लाल वसु से लेकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी तक इन के राजनैतिक शास्त्रागार में गालियों के जितने हथियार थे, इन्होंने आज उनका अच्छा प्रयोग करने की कोशिश की (व्यवधान) . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप कल बोलेंगे। आप सब मेहरबानी करके शान्ति से सेंट्रल हाल में चलिए—डॉ० गोविन्द दास जी का मान करना है। जरा हंसते-खेलते जाइये, अपने माथे की त्वोरी को बिलकुल भूल जाइये।

We adjourn to reassemble again tomorrow at 11-00 A.M.

18 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, November, 22, 1973/Agrahayana 1, 1895 (Saka).